प्रातः क्लास ओमशान्ति 1-10-67

रिकार्ड:- जाग सजनियां जाग:- ओमशान्ति। मीठे2 रूहानी बच्चों ने गीत सुना। रूहानी बाप ने इस पराये तन द्वारा मुख से कहा। बाप कहते हैं मुझे पराये तन में, पराये राजधानी में आना पड़ा। अभी रावण की राजधानी है। तन भी पराया है। क्योंकि इस शरीर में तो पहले से ही आत्मा है। मैं पराये तन में प्रवेश करता हूँ। अपना तन होता तो उसका नाम पड़ता। हमारा नाम बदलता नहीं। मुझे फिर भी कहते हैं शिव बाबा। गीत तो बच्चे रोज सुनते हैं। नव युग अर्थात नई दुनिया सतयुग आया। अब कहते किसको हैं जागो। आत्माओं को। क्योंकि आत्मायें घोर अंधियारे में सोई पड़ी हैं। कुछ भी समझ नहीं। बाप को ही नहीं जानते। अब बाप जगाने आये हैं। अभी तुम बेहद के बाप को जानते हो। उनसे बेहद का सुख मिलना है, नई युग में। सतयुग को नया युग कहा जाता है। कलयुग को पुराना युग कहा जाता है। विद्वान पंडित आदि कोई भी नहीं जानते। तुम भी नहीं जानते थे। कोई विद्वान पंडित आदि से पूछो नया युग पुराना फिर कैसे होता है कोई भी बताये न सकें। कहेंगे यह तो लाखों वर्ष की है। अभी तुम बच्चे जानते हो हम नये युग से पुराने युग में कैसे आये हैं। अर्थात स्वर्गवासी से नर्कवासी कैसे बने हैं। मनुष्य तो कुछ भी नहीं जानते। बिल्कुल ही तुच्छ बुद्धि हैं। अब जगदम्बा कहते हैं, अम्बा तो एक होती है ना। अम्बा वास्तव में माताओं को कहा जाता है। परन्तु पूजा तो एक की होनी चाहिए ना। शिव बाबा का भी एक यादगार है, अव्यभिचारी। अम्बा भी एक है। अनेक मंदिर बनाये, अनेक रखने से व्यभिचारी बन जाते हैं। जिनको जाकर पूजा करते हैं उनको जानते नहीं। जगदम्बा को भी जानते नहीं। यह है जगदम्बा और वह(लक्ष्मी) है जगत की महारानी। तुमको पता है। जगदम्बा कौन है और जगत महारानी कौन है। यह बातें कब कोई जान न सकें। लक्ष्मी को देवता कहेंगे। जगदम्बा को कहा जाता है ब्राह्मणी। ब्राह्मण संगम युग पर ही होते हैं। इस संगम को कोई नहीं जानते। प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा नई पुरुषोत्तम सृष्टि रची जाती है। पुरुषोत्तम तुमको वहाँ देखने में आवेगा। इस समय तुम ब्राह्मण पूजन लायक बनते हो। सेवा कर रहे हो भारत की। फिर तुम पूजा लायक बनेंगे। ब्रह्मा को इतनी भुजाएं देते हैं! तो अम्बा को भी क्यों नहीं देंगे। अम्बा को भी बहुत बच्चे हैं। वह भी तो प्रजापिता हो गई ना। बच्चों को तो प्रजापिता नहीं कहेंगे। मात-पिता ही प्रजापिता बनते हैं। लक्ष्मी-नारायण को कब सतयुग में जगत माता और जगत पिता नहीं कहेंगे। प्रजापिता का नाम बाला है। जगत माता और जगत पिता बात एक ही है। बाकि हैं उनके बच्चे। प्रजापिता ब्रह्मा के पास अजमेर में जायेंगे तो कहेंगे बाबा। क्योंकि वह है ही प्रजा पिता। हद के पितायें बच्चे पैदा करते हैं तो वह हद के प्रजा पिता ठहरे। यह है बेहद का। शिव बाबा तो सब आत्माओं का बेहद का बाबा है। यह भी तुम बच्चों को कान्ट्रास्ट लिखना है। जगदम्बा सरस्वती है एक ही। नाम कितने रख दिये हैं। दुर्गा काली आदि 2। अम्बा और बाबा के तुम सब बच्चे हो। यह रचना है ना। प्रजा पिता ब्रह्मा की बेटी है सरस्वती। उनको अम्बा कहते हैं। वास्तव में नाम है ही एक सरस्वती। बाकि हैं बच्चे और बच्चियां। हैं सब एडाप्टेड। इतने ढेर बच्चे कहाँ से आ सकते। यह सब है मुख वंशावली। मुख से स्त्री को क्रियेट किया तो रचना हो गया। कहते हैं यह मेरी है। मैं इन से बच्चे पैदा किये हैं। यह सब है एडाप्टेशन। ईश्वरीय मुख द्वारा। आत्मायें तो हैं ही। उनको एडाप्टेड नहीं किया जाता। बाप कहते हैं तुम आत्मायें सदैव मेरे बच्चे हो। फिर मैं आकर प्रजा पिता ब्रह्मा द्वारा बच्चों और बच्चियों को एडाप्ट करता हूँ। बच्चों को नहीं एडाप्ट करते। बच्चे और बच्चियों को करते हैं। यह बड़ी सूक्ष्म समझने की बात है। इन बातों को समझने से तुम यह(लक्ष्मी-नारायण) [बनते?] हो। कैसे बने यह हम समझा सकते हैं। क्या ऐसे कर्म किये, जो यह विश्व के मालिक बने। तुम [...] आदि में भी पूछ सकते हो तुमको मालूम है इन्होंने यह स्वर्ग की राजधानी कैसे ली। तुम्हारे में भी [...] यथार्थ रीति कोई नहीं समझा सकेंगे। जिन में दैवी गुण होंगे इस रूहानी सर्विस में ही लगे हुए होंगे, वह समझा सकते हैं। बाकि तो माया के विघ्नों में पड़े रहते हैं। अनेक प्रकार के हैं। इन विकार

1-10-67

ने ही तुमको रोगी बनाया है। देह अभिमान का भी रोग है। जो बहुत कामी होते हैं उनको कहते हैं तुम तो कामी कुत्ता हो। अपनी छोड़ बाहर में वेश्याओं पास जाते हो। बाप कहते हैं मैं तुमको पवित्र देवता बनाता हूँ। तुम सर्व गुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण थे। अब कामी कुत्ते बन गये हो। बेहद का बाप ऐसे कहेंगे ना। इसमें निंदा की बात नहीं। भारतवासियों को बेहद का बाप कहते हैं मैं यहाँ भारत में आता हूँ। भारत की महिमा तो अपरम अपार है। यहाँ आये नर्क को स्वर्ग पुरानी दुनिया को नई दुनिया बनाते हैं। सब को सुख शान्ति देते हैं। तो ऐसे बाप की भी महिमा अपरम अपार है। पारावार नहीं। यहाँ सब हैं महान भिखारी। जगदम्बा और लक्ष्मी की महिमा को भी कोई नहीं जानते। इनका भी कान्ट्रास्ट तुम बताये सकते हो। यह जगदम्बा की बायोग्राफी। यह लक्ष्मी की बायोग्राफी। वह ही जगदम्बा फिर लक्ष्मी बनती है। फिर लक्ष्मी सो 84 जन्मों बाद जगदम्बा होगी। चित्र भी अलग2 रखनी चाहिए। जगदम्बा अर्थात सरस्वती। दिखाते हो लक्ष्मी को कलश मिला। परन्तु लक्ष्मी फिर संगम पर कहाँ से आई। वह तो सतयुग में हुई है। यह सब बातें बाप बैठ समझाते हैं। चित्र बनाने के ऊपर में जो है उनको विचार सागर मंथन करना चाहिए। तो फिर समझाना सहज होगा। परन्तु इतनी विशाल बुद्धि कोई की बनी नहीं है। दिलपर चढ़े तब जब बाबा को अच्छी रीत याद करे। कहावत देते हैं ना जो चल पर सो दिल पर। ज्ञान और चलन है ना। बाप कहते हैं जो मुझे याद करेंगे, इन विश्व पर बैठेंगे वह ही दिल पर चढ़ेंगे। ऐसे कि जो बहुत अच्छी वाणी चलाते हैं वह दिल पर चढ़े हुये हैं। नहीं। बाप कहते हैं दिल पर तो अजुन कोई नहीं है। अन्त में चढ़ेंगे सो भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जब देहाभिमान खतम हो जायेगा। बाप ने समझाया है ब्रह्म ज्ञानी सन्यासी लोग जो हैं उन्हों का सारा पुरुषार्थ ही व्यर्थ होता है। फिर भी ब्रह्म में लीन होने की मेहनत करते हैं। ऐसे कोई लीन हो नहीं सकता। बाकि मेहनत करते हैं तो उत्तम पद पाते हैं। ऐसे महात्मा बनते हैं। क्योंकि ब्रह्म में लीन होने की मेहनत तो करते हैं ना। तो मेहनत का भी फल मिलता है। बाकि मुक्ति जीवन मुक्ति नहीं मिल सकता। अब वह तो सन्यासी हैं। उनको प्लैटीनम् में वजन करते हैं। कर क्या करेंगे। या तो बेचेंगे या तो गवर्मेन्ट को देंगे। सो भी बाबा तो समझाते हैं गया है। कर के चाँदी में वजन करेंगे। यह सोना आदि तो बाम्ब बनाने के काम की चीज है। गपोड़े भी बहुत हैं ना। इन सब बातों में कोई फायदा नहीं है। तुम तो जानते हो यह पुरानी दुनिया अब गई कि गई। इतने सब बाम्ब बनाई है, रखने को थोड़े ही हैं। तुम जानते हो पुरानी की विनाश लिए यह बाम्स आदि काम आवेंगे। अनेक प्रकार के बाम्स हैं। बाप बच्चों को रोज2 गुह्य नई प्वाइन्ट्स समझाते रहते हैं। अभी तुम ज्ञान-ज्ञानेश्वर बनते हो। बाप ज्ञान और योग सिखलाते हैं। फिर राज राजेश्वर डबल सिरताज दैवी-देवता बनेंगे। कौन सा ऊँच पद है? ब्राह्मण चोटी है सब ऊपर में। चोटी सब से ऊपर है। अभी तुम बच्चों को पतित से पावन बनाने बाप आये हैं। फिर तुम भी पतित-पावन बनते हो। नशा है? हम सभी को पावन बनाए राजराजेश्वर बनाये रहे हैं। नशा हो तो बहुत खुशी में रहे। अपने दिल से पूछो हम कितने को आप समान बनाते हैं। प्रजा पिता ब्रह्मा और जगदम्बा दोनों को एक जैसे हैं। ब्राह्मणों की रचना रचते हैं। शूद्र से ब्राह्मण बनने की युक्ति बाप बतलाते हैं। कोई शास्त्रों में नहीं है। वह है भी गीता का युग। महाभारत लड़ाई भी करीब हुई थी। राजयोग भी सिखाते थे। शास्त्रों में फिर घोड़े गाड़ी बैठ दिखाई है। घोड़े गाड़ी में पढ़ाई होती है क्या। राजयोग एक को सिखाया होगा क्या। मनुष्य की बुद्धि में फिर अर्जुन और कृष्ण ही है। यहाँ तो ढेर पढ़ते हैं। बैठे भी देखो कैसे साधारण। छोटे बच्चे अल्फ बे पढ़ते हैं ना। तुम बैठे हो। तुमको भी अल्फ बे पढ़ाये रहे हैं। अल्फ और बे। अल्फ बाप बे है वर्सा। बाप कहते हैं मुझे याद करो तो विश्व के मालिक बनेंगे। बाप की याद से पावन बनेंगे। कोई भी आसुरी काम न करना है। दैवी गुण धारण करना है। देखना है हमारे में कोई अवगुण तो नहीं है। मैं निर्गुण हारे में .... अब निर्गुण आश्रम भी है। परन्तु अर्थ कुछ भी नहीं समझते